INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

सूचना प्रबंधन के वर्तमान युग में रंगनाथन दर्शन

*रोहित पीलवान
शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

*शिवाराम राव के
आचार्य, पुस्तकालय विज्ञान विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17628385
Pg:133-144

ARTICLE INFO
Received:18-10-2025
Accepted:26-11-2025
Published:01-12-2025

सारांश

मानव सभ्यता के विकास में सूचना और ज्ञान का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्राचीन समय में जब सूचना केवल मौखिक परंपरा या हस्तलिखित ग्रंथों के रूप में संरक्षित होती थी, तब भी उसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन और प्रगति सुनिश्चित करना था। आज के वैश्विक परिदृश्य में सूचना का स्वरूप बहुआयामी हो चुका है, मुद्रित पुस्तकों से आगे बढ़कर ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, डिजिटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन डेटाबेस, बिग डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक इसका विस्तार देखा जा सकता है। सूचना का यह विस्फोट सूचना प्रबंधन को जटिल बना देता है, क्योंकि अब केवल सूचना का संग्रहण और संगठन ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका त्वरित पुनर्प्राप्ति, सही उपयोगकर्ता तक समय पर पहुँच, गुणवत्ता का परीक्षण और सुरक्षा भी अनिवार्य हो गया है। ऐसे परिवर्तित संदर्भ में सूचना प्रबंधन केवल पुस्तकालयों तक सीमित न रहकर शिक्षा, अनुसंधान, शासन, उद्योग और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अत्यावश्यक बन चुका है। इस निरंतर परिवर्तित सूचना जगत में भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के जनक कहे जाने वाले डॉ. एस.आर. रंगनाथन का दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके प्रतिपादन के समय था। उनके पाँच नियम उपयोगकर्ता-केंद्रित सूचना सेवाओं का शाश्वत आधार प्रस्तुत करते हैं। "पुस्तक उपयोग के लिए है" से लेकर "पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है" तक की उनकी अवधारणाएँ आज के डिजिटल युग में और भी जीवंत दिखाई देती हैं। डिजिटल लाइब्रेरी, मेटाडाटा मानक, ओपन एक्सेस रिपोजिटरी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणालियाँ वस्तुतः उन्हीं सिद्धांतों का आधुनिक रूप हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सूचना प्रबंधन के वर्तमान युग में रंगनाथन दर्शन न केवल मार्गदर्शक है, बल्कि भविष्य की सूचना सेवाओं की दिशा भी निर्धारित करता है।

प्रमुख शब्द (Keywords)- रंगनाथन, सूचना प्रबंधन, पाँच नियम, डिजिटल लाइब्रेरी, नॉलेज मैनेजमेंट, भारतीय दर्शन, ओपन एक्सेस, AI

प्रस्तावना (Introduction)

सूचना आज के युग में सबसे मूल्यवान संसाधन बन चुकी है। डिजिटल क्रांति और इंटरनेट के प्रसार ने सूचना के प्रवाह को अत्यधिक तीव्र और विशाल बना दिया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ऑनलाइन डेटाबेस और क्लाउड प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से सूचना तक पहुँच पहले से कहीं अधिक सरल और त्वरित हो गई है। परंतु, इतनी अधिक सूचना के बीच उपयोगकर्ता के सामने प्रासंगिक और सटीक जानकारी चुनना कठिन हो गया है। इसी संदर्भ में सूचना प्रबंधन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। सूचना प्रबंधन केवल जानकारी का संग्रहण या संग्रह नहीं है, बल्कि उसे व्यवस्थित करना, वर्गीकृत करना, संरक्षित करना और सही समय पर सही उपयोगकर्ता तक पहुँचाना भी है। इस संदर्भ में डॉ. एस. आर. रंगनाथन का योगदान अत्यंत प्रासंगिक है। रंगनाथन को आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान और सूचना प्रबंधन का जनक माना जाता है। उन्होंने पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में सेवा-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने का मार्गदर्शन दिया। उनके पाँच नियम "पुस्तक का उद्देश्य उपयोग है, प्रत्येक पाठक के लिए अपनी पुस्तक, प्रत्येक पुस्तक के लिए अपना पाठक, प्रत्येक पुस्तक को सही जगह पर रखना, और पुस्तकालय एक निरंतर विकसित होती संस्था है" सूचना प्रबंधन के वर्तमान युग में भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं। ये नियम न केवल पुस्तकालय सेवाओं के संचालन में बल्कि डिजिटल सूचना प्रबंधन, ई-लाइब्रेरी और सूचना विज्ञान के व्यापक क्षेत्र में भी मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

रंगनाथन का PMEST वर्गीकरण मॉडल (Personality, Matter, Energy, Space, Time) आज भी सूचना संगठन और डेटा संरचना के डिज़ाइन में उपयोगी है। डिजिटल युग में, जहां सूचना का दायरा और स्वरूप बदल रहा है जैसे ई-पुस्तकें, डिजिटल आर्टिकल्स, मल्टीमीडिया डेटा रंगनाथन के सिद्धांतों के अनुसार वर्गीकरण और सूचकांक बनाना उपयोगकर्ताओं के लिए सूचना खोज को सरल बनाता है। इसके अलावा, उनकी सेवा-केंद्रित दृष्टि उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं और हितों को प्राथमिकता देती है, जो डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर AI आधारित सर्च और रिकमेंडेशन सिस्टम में परिलक्षित होती है।

आज के समय में, सूचना प्रबंधन की चुनौतियाँ जैसे सूचना का अत्यधिक प्रवाह, डिजिटल डिवाइड, कॉपीराइट और गोपनीयता के मुद्दे इन सिद्धांतों के प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से कम की जा सकती हैं। रंगनाथन का दर्शन केवल परंपरागत पुस्तकालय तक सीमित नहीं है, बल्कि डिजिटल सूचना सेवाओं, शोध डेटाबेस, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आधारित सूचना प्रणाली और स्मार्ट लाइब्रेरी सेवाओं में भी प्रासंगिक है।

अतः यह शोध यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि कैसे रंगनाथन का दर्शन और उनके पाँच नियम आज के सूचना प्रबंधन के युग में डिजिटल और परंपरागत दोनों ही संदर्भों में प्रभावी और मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। यह न केवल पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के छात्रों के लिए बल्कि शोधकर्ताओं, सूचना पेशेवरों और नीति निर्माताओं के लिए भी महत्वपूर्ण है।

शोध उद्देश्य (Objectives)

1. रंगनाथन के सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों का विश्लेषण करना।

2. उनके कार्यों में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण को समझना।
3. डिजिटल लाइब्रेरी, ओपन एक्सेस और नॉलेज मैनेजमेंट के संदर्भ में पाँच नियमों की भूमिका को पहचानना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

इस शोध में गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, इसके अंतर्गत पुस्तकें, शोध पत्र, सम्मेलन कार्यवाहियाँ, डिजिटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन जर्नल, वेबसाइट, रिपोर्ट एवं ऑडियो-विज़ुअल सामग्री इत्यादि सम्मिलित हैं।

रंगनाथन का जीवन एवं योगदान (Life and Contribution)

डॉ. एस.आर. रंगनाथन का नाम भारतीय पुस्तकालय विज्ञान ही नहीं, बल्कि विश्व पुस्तकालय विज्ञान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उनका जन्म 12 अगस्त 1892 को मद्रास प्रेसीडेंसी (वर्तमान तमिलनाडु) के छोटे से गाँव शियाली में हुआ था। वे प्रारंभ से ही अत्यंत मेधावी, अनुशासित और अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे। गणित विषय में उनकी गहरी रुचि थी और इसी कारण उन्होंने उच्च शिक्षा गणित में प्राप्त की। उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से गणित में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और बाद में अध्यापन कार्य से जुड़े। प्रारंभ में वे गणित के प्राध्यापक के रूप में अध्यापन कर रहे थे, किंतु 1924 में जब उन्हें मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया, तभी उनके जीवन की दिशा परिवर्तित हो गई। रंगनाथन का पुस्तकालय विज्ञान की ओर झुकाव संयोगवश हुआ, क्योंकि उनका प्रारंभिक विषय गणित था। किंतु गणितीय दृष्टिकोण, तार्किक विवेचना और विश्लेषणात्मक सोच ने उन्हें पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में नई-नई विधियाँ विकसित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध किया। इंग्लैंड की यात्रा के दौरान उन्होंने ब्रिटिश पुस्तकालय प्रणाली का गहन अध्ययन किया और वहीं से उन्हें प्रेरणा मिली कि भारत में भी पुस्तकालयों को व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से विकसित किया जाना चाहिए। मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में उन्होंने केवल संगठनात्मक कार्य ही नहीं किए, बल्कि उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान को एक स्वतंत्र शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। बाद में वे दिल्ली विश्वविद्यालय और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से भी जुड़े और वहाँ पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में अध्यापन कार्य किया। उनका निधन 27 सितंबर 1972 को हुआ, किंतु उनके विचार आज भी जीवंत हैं और विश्व भर के पुस्तकालयों को दिशा प्रदान करते हैं।

भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. एस.आर. रंगनाथन का योगदान अतुलनीय है। उन्हें आधुनिक भारतीय पुस्तकालय आंदोलन का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने न केवल पुस्तकालय की परंपरागत धारणाओं को बदला बल्कि उसे समाज, शिक्षा और संस्कृति से जोड़कर एक जीवंत संस्था का रूप दिया। उन्होंने सबसे पहले पुस्तकालयों की उपयोगिता और उनकी भूमिका को स्पष्ट करने के लिए पाँच नियम प्रतिपादित किए जिनमें पुस्तक और पाठक को केंद्र में रखकर यह बताया गया कि प्रत्येक पुस्तक के लिए पाठक होना चाहिए और प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तक उपलब्ध कराई जानी चाहिए, पुस्तकालय का उद्देश्य

केवल पुस्तकों का संग्रह करना नहीं बल्कि उनका उपयोग सुनिश्चित करना होना चाहिए, समय और श्रम की बचत करनी चाहिए और पुस्तकालय को एक बढ़ती हुई संस्था के रूप में निरंतर विकसित होना चाहिए। इन नियमों ने भारतीय पुस्तकालयों को स्थिर और निष्क्रिय संस्थाओं से हटाकर गतिशील और उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवा संस्थान बना दिया।

उन्होंने वर्गीकरण के क्षेत्र में 'कोलन क्लासिफिकेशन' नामक नई पद्धति का विकास किया जो विषयों को उनके विभिन्न पहलुओं या उपघटकों के आधार पर व्यवस्थित करने का वैज्ञानिक तरीका प्रस्तुत करती है। इस पद्धति ने भारतीय पुस्तकालयों को जटिल और बहुविषयी विषयों को व्यवस्थित करने की लचीलापन प्रदान किया और यह आज भी कई विश्वविद्यालयों और शोध पुस्तकालयों में प्रचलन में है। इसी प्रकार सूचीकरण और अनुक्रमण की दिशा में भी उन्होंने मौलिक योगदान दिया। उनका 'क्लासिफाइड कैटलॉग कोड' भारतीय पुस्तकालयों में एकरूपता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर आया। इस कोड के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को केवल शीर्षक या लेखक तक सीमित न रहकर विषय-आधारित खोज करने की सुविधा मिली जिससे शोध और अध्ययन की प्रक्रिया सरल और अधिक प्रभावी हुई।

पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने 1929 में मद्रास विश्वविद्यालय में भारत का पहला पुस्तकालय विज्ञान डिप्लोमा कोर्स शुरू किया और इस विषय की व्यवस्थित शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया। इसके बाद 1962 में उन्होंने बंगलौर में डॉक्यूमेंटेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना की जिसने सूचना विज्ञान और प्रलेखन के क्षेत्र में भारत को विश्वस्तरीय पहचान दिलाई। रंगनाथन ने अपनी विद्वता और शोध से कई ग्रंथों की रचना की जिनमें 'फाइव लॉज़ ऑफ लाइब्रेरी साइंस', 'कोलन क्लासिफिकेशन', 'क्लासिफाइड कैटलॉग कोड', 'प्रोलिगोमेना टू लाइब्रेरी क्लासिफिकेशन', 'लाइब्रेरी एडमिनिस्ट्रेशन' और 'लाइब्रेरी बुक सिलेक्शन' प्रमुख हैं। ये सभी ग्रंथ आज भी भारतीय पुस्तकालय शिक्षा और शोध में आधारभूत संदर्भ ग्रंथ माने जाते हैं और पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों तथा शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

रंगनाथन केवल सैद्धांतिक योगदान तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने भारतीय पुस्तकालय आंदोलन को भी दिशा दी। उन्होंने विभिन्न राज्यों में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम लागू कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय पुस्तकालय संघ की गतिविधियों को सक्रिय बनाकर देश में पुस्तकालयों के विकास को संस्थागत रूप दिया। उनके प्रयासों से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में पुस्तकालयों के प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने पुस्तकालय को लोकतांत्रिक समाज की आत्मा बताया और यह माना कि पुस्तकालय केवल ज्ञान का भंडार नहीं बल्कि समाज के हर वर्ग को समान रूप से सूचना और शिक्षा उपलब्ध कराने वाला माध्यम है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में उन्होंने पुस्तकालयों को सांस्कृतिक धरोहर और शैक्षिक विकास के आधार स्तंभ के रूप में प्रस्तुत किया। उनका यह दृष्टिकोण था कि पुस्तकालय समाज के हर वर्ग तक पहुँचना चाहिए और किसी भी व्यक्ति को ज्ञान से वंचित नहीं रहना चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने ग्रामीण पुस्तकालयों की आवश्यकता पर बल दिया और जनसाधारण को पुस्तकालय से जोड़ने के लिए प्रयास किए।

इस प्रकार डॉ. एस.आर. रंगनाथन का योगदान भारतीय पुस्तकालय विज्ञान में बहुआयामी रहा। उन्होंने एक ओर पुस्तकालयों को दार्शनिक और सैद्धांतिक आधार प्रदान किया तो दूसरी ओर व्यावहारिक पद्धतियों, वर्गीकरण और सूचीकरण के नियमों, शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों, आंदोलन और अधिनियमों के माध्यम से उन्हें आधुनिक रूप दिया। आज भी जब पुस्तकालय डिजिटल युग में प्रवेश कर चुके हैं, रंगनाथन की सोच और कार्य उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके जीवनकाल में थे। उनका दर्शन और कार्यभार भारतीय पुस्तकालय विज्ञान को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करने में आधारशिला साबित हुआ है।

रंगनाथन का दर्शन और पाँच नियम (Ranganathan's Philosophy and Five Laws)

डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने पुस्तकालय विज्ञान को एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक और सेवा-प्रधान विषय के रूप में विकसित किया। उनका दर्शन इस विचार पर आधारित था कि पुस्तकालय केवल पुस्तकों के भंडार नहीं, बल्कि ज्ञान के जीवंत केंद्र हैं, जिनका उद्देश्य उपयोगकर्ताओं तक सही समय पर सही सूचना पहुँचाना है। रंगनाथन ने पुस्तकालयों के संचालन को केवल तकनीकी कार्यों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक सामाजिक सेवा के रूप में परिभाषित किया। उनके विचार में, सूचना का प्रबंधन ऐसा होना चाहिए जो बदलते समय, प्रौद्योगिकी और उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं के साथ तालमेल बिठा सके।

पाँच नियमों का विवरण (Five Laws of Library Science)

1931 में डॉ. रंगनाथन ने पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम प्रतिपादित किए, जो आज भी सूचना प्रबंधन और पुस्तकालय सेवाओं की रीढ़ माने जाते हैं।

पुस्तकें उपयोग के लिए हैं (Books are for use) इस नियम का अर्थ है कि पुस्तकों और सूचना संसाधनों का मुख्य उद्देश्य उनका उपयोग है, न कि उन्हें सुरक्षित ताले में बंद करके रखना। पुस्तकालय को अपने संसाधनों को अधिक से अधिक सुलभ बनाने के लिए अनुकूल वातावरण, उचित वर्गीकरण और त्वरित सेवा प्रदान करनी चाहिए।

हर पाठक के लिए उसकी पुस्तक (Every reader his/her book) प्रत्येक उपयोगकर्ता की सूचना आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। पुस्तकालय का दायित्व है कि वह सभी प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए उनकी आवश्यकतानुसार सामग्री उपलब्ध कराए, चाहे वह प्रिंट, डिजिटल या ऑडियो-विज़ुअल रूप में हो।

हर पुस्तक के लिए उसका पाठक (Every book its reader) प्रत्येक पुस्तक या सूचना स्रोत का कोई न कोई पाठक अवश्य होता है। इसलिए पुस्तकालय को संग्रह प्रबंधन और प्रचार-प्रसार के ऐसे उपाय करने चाहिए जिससे वह सामग्री अपने उपयुक्त पाठक तक पहुँच सके।

पाठक का समय बचाएँ (Save the time of the reader) सूचना युग में समय सबसे मूल्यवान संसाधन है। पुस्तकालय को चाहिए कि वह कैटलॉगिंग, अनुक्रमण, और खोज उपकरणों (Search Tools) को इतना सुगम बनाए कि पाठक को वांछित सूचना न्यूनतम समय में प्राप्त हो सके।

पुस्तकालय एक विकसित होती हुई संस्था है (Library is a growing organism) पुस्तकालय स्थिर नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली संस्था है। संग्रह, तकनीक, सेवाएँ और बुनियादी ढाँचा समय के साथ बदलते रहना चाहिए, ताकि यह समाज की नई सूचना आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण (Indian philosophical perspectives)

डॉ. एस. आर. रंगनाथन के कार्यों में भारतीय दर्शन की गहरी छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनके पुस्तकालय विज्ञान संबंधी सिद्धांत और नियम केवल तकनीकी दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि इनमें भारतीय दार्शनिक परंपराओं के आदर्श भी अंतर्निहित हैं। विशेषकर वैदिक, उपनिषदिक, सांख्य, न्याय दर्शन तथा गीता में वर्णित सेवा और निष्काम कर्म की प्रेरणा ने उनकी सोच और कार्यशैली को प्रभावित किया। रंगनाथन के सिद्धांतों पर वैदिक और उपनिषदिक विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वैदिक मंत्र "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और उपनिषदों में वर्णित "विद्या का उद्देश्य आत्मज्ञान और लोकमंगल" की अवधारणा उनके पहले और दूसरे नियम "पुस्तकें उपयोग के लिए हैं" और "हर पाठक के लिए उसकी पुस्तक" में प्रतिध्वनित होती है। उपनिषदों का ज्ञान बांटने का भाव पुस्तकालय विज्ञान के उस सिद्धांत में झलकता है, जिसमें जानकारी और संसाधनों को हर वर्ग तक पहुँचाने पर जोर दिया जाता है।

"सर्वजन हिताय और विद्या-दान" की परंपरा भी उनके दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा रही। भारतीय संस्कृति में विद्या को कभी बेचा नहीं जाता, बल्कि समाज के हित के लिए दान किया जाता है। रंगनाथन के "हर पुस्तक के लिए उसका पाठक" और "पाठक का समय बचाएँ" जैसे नियम इसी लोकमंगलकारी दृष्टिकोण को मूर्त रूप देते हैं। उनके विचार में पुस्तकालय एक ऐसा माध्यम है, जो समाज के हर व्यक्ति के ज्ञानवर्धन और प्रगति में योगदान देता है।

उनकी PMEST संरचना का संबंध "सांख्य और न्याय दर्शन" से भी जोड़ा जा सकता है। सांख्य दर्शन में सृष्टि और पदार्थ को विभिन्न तत्वों में विभाजित करने का सिद्धांत है, जबकि न्याय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधनों का वर्गीकरण और तार्किक विश्लेषण प्रमुख है। PMEST में Personality, Matter, Energy, Space और Time का क्रम इसी विश्लेषणात्मक दृष्टि का परिणाम है, जिसमें किसी भी विषय को उसके मूल तत्वों में विभाजित करके व्यवस्थित किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, रंगनाथन के कार्यों में "सेवा भाव और निष्काम कर्म की प्रेरणा" भी गीता के सिद्धांतों से मेल खाती है। गीता में वर्णित "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" का भाव उनके पाँचवें नियम—"पुस्तकालय एक विकसित होने वाली संस्था है" में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। पुस्तकालय कर्मी को अपना कार्य निष्ठा और सेवा भावना से करना चाहिए, चाहे तत्काल फल मिले या न मिले, क्योंकि यह समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी योगदान है।

इस प्रकार, डॉ. रंगनाथन के कार्य केवल पुस्तकालय विज्ञान की तकनीकी उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि इनमें भारतीय दार्शनिक परंपरा की गहरी जड़ें भी विद्यमान हैं, जो उनके सिद्धांतों को सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रासंगिकता प्रदान करती हैं।

वर्गीकरण एवं अनुक्रमण: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता (Classification and Indexing: Relevance in the Modern Context)

डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पुस्तकालय वर्गीकरण और अनुक्रमण की नींव रखी, वह आज भी सूचना संगठन के क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्थापित है। रंगनाथन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान कोलन क्लासिफिकेशन (Colon Classification) की रचना है, जिसने पारंपरिक दशमलव वर्गीकरण प्रणालियों से हटकर एक बिल्कुल नए आयाम को जन्म दिया। यह प्रणाली पाँच मूलभूत वर्गीकरण श्रेणियों (Personality, Matter, Energy, Space और Time) पर आधारित थी, जिन्हें मिलाकर किसी भी विषय की गहराई और उसके उपविषयों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता था। इस लचीलेपन और संयोजन की क्षमता ने कोलन क्लासिफिकेशन को विशुद्ध विषय-विश्लेषण और बहुविषयक ज्ञान के संगठन के लिए अत्यंत उपयुक्त बना दिया। रंगनाथन ने वर्गीकरण को केवल पुस्तकों को अलमारियों में व्यवस्थित करने का यांत्रिक कार्य न मानकर, ज्ञान के वैज्ञानिक संगठन का उपकरण माना।

अनुक्रमण के क्षेत्र में भी रंगनाथन ने गहन कार्य किया। उनका मानना था कि पुस्तकालय का वास्तविक उद्देश्य उपयोगकर्ता को वांछित सूचना तक शीघ्र पहुँचाना है, और यह कार्य अनुक्रमण के वैज्ञानिक तरीकों से ही संभव है। उन्होंने Chain Indexing की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें विषयों के बीच संबंधों को तार्किक रूप से जोड़ा जाता है। इससे किसी भी दस्तावेज़ को अनेक बिंदुओं से खोजा जा सकता था, और उपयोगकर्ता को सूचनाएँ बहुविध मार्गों से उपलब्ध कराई जा सकती थीं। इस दृष्टिकोण ने आगे चलकर विषय शीर्षक सूचियाँ (Subject Heading Lists) और थिसॉरस (Thesaurus) के विकास को भी प्रभावित किया।

यदि आज के डिजिटल युग में देखा जाए, तो रंगनाथन की ये अवधारणाएँ आधुनिक मेटाडाटा मानकों और ज्ञान संगठन प्रणालियों की नींव में प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती हैं। मेटाडाटा, जो किसी सूचना संसाधन का विवरण और उसके खोजने योग्य तत्त्वों को संरचित रूप देता है, वस्तुतः रंगनाथन की अनुक्रमण और वर्गीकरण की भावना का ही परिष्कृत रूप है। जैसे उन्होंने किसी विषय के विश्लेषण में गुणों और संबंधों पर बल दिया, वैसे ही आज के मेटाडाटा मानक जैसे Dublin Core, MARC21, MODS आदि सूचना संसाधनों की पहचान, पहुँच और पुनर्प्राप्ति को संभव बनाते हैं। Dublin Core का 15 तत्त्वों पर आधारित मॉडल उपयोगकर्ताओं को दस्तावेज़ के शीर्षक, लेखक, विषय, प्रकाशन, भाषा और प्रकार जैसी सूचनाएँ प्रदान करता है, जो वस्तुतः वर्गीकरण और अनुक्रमण के आधुनिक डिजिटलीकृत रूप के समान है।

इसी प्रकार Semantic Web की अवधारणा भी रंगनाथन की सोच से मेल खाती है। रंगनाथन ने कहा था कि ज्ञान का संगठन ऐसा होना चाहिए कि वह उपयोगकर्ता की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हो सके। सेमांटिक वेब का मुख्य उद्देश्य वेब पर उपलब्ध असंख्य डेटा को संरचित करना, अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करना और मशीन-पठनीय बनाना है। यह वही विचार है जो रंगनाथन ने "हर पुस्तक का अपना पाठक और हर पाठक की अपनी पुस्तक" के सिद्धांत के माध्यम से प्रस्तुत किया था। सेमांटिक वेब तकनीकें जैसे RDF (Resource Description Framework), OWL (Web Ontology Language) और SPARQL

सूचना संसाधनों के बीच गहरे संबंध स्थापित करके उपयोगकर्ता को सटीक और प्रासंगिक सूचना उपलब्ध कराती हैं। इस प्रकार सेमांटिक वेब रंगनाथन की वर्गीकरण और अनुक्रमण की परिकल्पना का एक उन्नत तकनीकी रूप है।

Knowledge Organization Systems (KOS) के संदर्भ में भी रंगनाथन के योगदान को समझना आवश्यक है। थिसॉरस, टैक्सोनॉमी, ऑंटोलॉजी और क्लासिफिकेशन स्कीम जैसे KOS उपकरण आज डिजिटल नॉलेज मैनेजमेंट के मूलभूत आधार हैं। इन प्रणालियों का उद्देश्य भी ज्ञान को इस प्रकार व्यवस्थित करना है कि उपयोगकर्ता सूचना संसाधनों तक आसानी से पहुँच सके। रंगनाथन के कोलन क्लासिफिकेशन और चेन इंडेक्सिंग में विषयों के बीच जो तर्कसंगत संरचना और अनुक्रमण की गहराई दिखाई देती है, वह आज के KOS की जड़ों में मौजूद है। उदाहरण के लिए, ऑंटोलॉजी में संकल्पनाओं के बीच "class-subclass" और "part-whole" संबंध स्थापित किए जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे रंगनाथन ने किसी विषय की विश्लेषणात्मक संरचना में PMEST (Personality, Matter, Energy, Space, Time) का ढाँचा प्रस्तुत किया था।

वर्तमान सूचना समाज में जहाँ बिग डेटा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का वर्चस्व बढ़ रहा है, रंगनाथन की सोच और भी प्रासंगिक हो जाती है। डेटा माइनिंग और नॉलेज डिस्कवरी की प्रक्रियाएँ तभी प्रभावी हो सकती हैं जब सूचना संसाधन सुव्यवस्थित और परस्पर संबद्ध हों। रंगनाथन ने जिस "विकसित होते जीव" की संकल्पना पुस्तकालय के लिए दी थी, वही आज डिजिटल नॉलेज सिस्टम पर भी लागू होती है। सूचना का संगठन और अनुक्रमण एक स्थिर प्रक्रिया नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तित और विकसित होती प्रक्रिया है, जो नए ज्ञान और तकनीकों के अनुरूप ढलती रहती है।

समग्र रूप से कहा जाए तो वर्गीकरण और अनुक्रमण के क्षेत्र में रंगनाथन का योगदान केवल ऐतिहासिक महत्व का नहीं है, बल्कि यह आज के डिजिटल युग में सूचना प्रबंधन की बुनियादी आवश्यकताओं का उत्तर भी प्रदान करता है। मेटाडाटा मानक, सेमांटिक वेब और नॉलेज ऑर्गेनाइज़ेशन सिस्टम जैसे उपकरण वास्तव में उनकी दूरदर्शी सोच के ही तकनीकी अवतार हैं। वास्तव में कहा जा सकता है कि रंगनाथन सूचना संगठन के Visionary Architect थे, जिनके विचार आज भी जीवित हैं और आधुनिक सूचना प्रबंधन की रीढ़ बने हुए हैं।

सूचना प्रबंधन का वर्तमान परिदृश्य (Current Scenario of Information Management)

वर्तमान समय में सूचना प्रबंधन का स्वरूप पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर डिजिटल युग के अनुरूप विकसित हो चुका है। डिजिटल पुस्तकालय, ई-संसाधन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने ज्ञान के संग्रह, संरक्षण और वितरण की प्रक्रिया को अत्यधिक सहज और त्वरित बना दिया है। डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से पाठक अपने घर या कार्यस्थल से ही विशाल संग्रह तक पहुँच सकते हैं, वहीं ई-पुस्तकें, ई-पत्रिकाएँ और मल्टीमीडिया संसाधन शोध और अध्ययन को अधिक सुविधाजनक बना रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकें उपयोगकर्ता की आवश्यकता के अनुरूप व्यक्तिगत अनुशंसाएँ प्रदान करती हैं और सूचना पुनर्प्राप्ति की गति एवं सटीकता में वृद्धि करती हैं।

सूचना के लोकतांत्रिक प्रसार में मुक्त अभिगम और मोबाइल सेवाओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुक्त अभिगम मंच शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और आम जनता को बिना किसी सदस्यता शुल्क के शोध पत्रों और अन्य शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, मोबाइल अनुप्रयोग और वेब-आधारित सेवाएँ सूचना को 'चलते-फिरते' उपलब्ध कराती हैं, जिससे समय और स्थान की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। इस तरह मोबाइल-आधारित सेवाएँ ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक भी ज्ञान का विस्तार कर रही हैं।

ज्ञान प्रबंधन और डेटा विश्लेषण आज के सूचना प्रबंधन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। ज्ञान प्रबंधन के माध्यम से संस्थाएँ अपनी सूचनाओं और ज्ञान-संपदा का व्यवस्थित संगठन करती हैं, जिससे निर्णय-निर्माण और नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है। वहीं डेटा विश्लेषण उपयोगकर्ता व्यवहार, सूचना उपयोग के पैटर्न और संसाधनों की प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है, जिससे भविष्य की सूचना सेवाओं को अधिक प्रभावी और उपयोगकर्ता-केंद्रित बनाया जा सकता है। इस प्रकार वर्तमान परिदृश्य में सूचना प्रबंधन तकनीकी, शोध और सामाजिक सभी पहलुओं को एक साथ जोड़कर एक समग्र और सुलभ ज्ञान-पर्यावरण का निर्माण कर रहा है।

रंगनाथन दर्शन और आधुनिक सूचना प्रबंधन का समन्वय (Integration of Ranganathan philosophy and modern information management)

रंगनाथन दर्शन और आधुनिक सूचना प्रबंधन का गहरा समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने जिस समय पाँच नियम प्रतिपादित किए थे, उस समय पुस्तकालय मुख्यतः मुद्रित सामग्री तक सीमित थे, लेकिन आज डिजिटल लाइब्रेरी, ई-संसाधन और नॉलेज मैनेजमेंट सिस्टम के युग में भी उनके सिद्धांत उतने ही प्रासंगिक हैं। सूचना प्रबंधन का मूल उद्देश्य उपयोगकर्ता तक सही समय पर सही सूचना पहुँचाना है, और यह वही दृष्टिकोण है जो रंगनाथन ने अपने दर्शन में प्रस्तुत किया था।

यूज़र-केंद्रित सेवाओं में पाँच नियमों की प्रासंगिकता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है। पहला नियम "Books are for use" आज "Information is for use" के रूप में विकसित हो चुका है, जहाँ डिजिटल संसाधनों की पहुँच सुनिश्चित करना प्राथमिकता है। दूसरा और तीसरा नियम उपयोगकर्ता को केंद्र में रखते हुए उनकी सूचना आवश्यकताओं को समझने और तदनुसार संसाधन उपलब्ध कराने की ओर इंगित करते हैं। चौथा नियम समय और साधनों की बचत पर बल देता है, जो आज के ऑनलाइन सर्च इंजन, OPACs और AI आधारित रिट्रीवल सिस्टम के माध्यम से संभव हुआ है। पाँचवाँ नियम "Library is a growing organism" डिजिटल युग में और भी व्यापक अर्थ ग्रहण करता है, जहाँ पुस्तकालय न केवल संसाधनों में बल्कि सेवाओं और तकनीकों में भी लगातार विस्तार कर रहे हैं।

डिजिटल युग में वर्गीकरण पद्धतियों का महत्व भी रंगनाथन की सोच से ही जुड़ा है। उनकी Colon Classification ने जटिल विषयों को लचीले ढंग से व्यवस्थित करने का मार्ग प्रशस्त किया, जो आज metadata standards (जैसे MARC, Dublin Core), semantic web और ontology-based systems में विकसित रूप में दिखाई देता है। पारंपरिक वर्गीकरण अब टैगिंग, फोकस्ड थिसॉरस और नॉलेज ग्राफ के रूप में बदल चुका है, किंतु मूल विचार वही है—सूचना का तार्किक और सुलभ संगठन।

नॉलेज ऑर्गेनाइजेशन और सूचना पुनर्प्राप्ति (Information Retrieval) में भी रंगनाथन की सोच का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। उन्होंने सूचना को उपयोगकर्ता की आवश्यकता से जोड़ने पर बल दिया था, जो आज के AI-driven search engines, personalized recommendations और context-based retrieval systems का मूल आधार है। Semantic web और linked data की अवधारणाएँ रंगनाथन की "facet analysis" और "hospitality in notation" जैसी अवधारणाओं से मेल खाती हैं, जो बताती हैं कि सूचना को बहुआयामी और परस्पर जुड़े हुए रूप में व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

सूचना प्रबंधन की चुनौतियाँ और समाधान (Challenges and Solutions of Information Management)

सूचना का अत्यधिक प्रवाह- सूचना का अत्यधिक प्रवाह (Information Overload) वह स्थिति है, जब डिजिटल माध्यमों, इंटरनेट, सोशल मीडिया, और अन्य स्रोतों से इतनी अधिक मात्रा में जानकारी उपलब्ध हो कि उपयोगकर्ता के लिए प्रासंगिक, विश्वसनीय और सही सूचना को चुनना कठिन हो जाए। यह समस्या निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है और समय व संसाधनों की बर्बादी का कारण बन सकती है।

कॉपीराइट- कॉपीराइट बौद्धिक संपदा अधिकार का एक कानूनी प्रावधान है, जिसके तहत किसी लेखक, रचनाकार या प्रकाशक को उसकी रचना के उपयोग, पुनरुत्पादन और वितरण पर विशेष अधिकार दिए जाते हैं। डिजिटल युग में अनधिकृत कॉपी, पायरेसी और बिना अनुमति पुनर्प्रकाशन जैसी गतिविधियाँ कॉपीराइट उल्लंघन का रूप लेती हैं।

डिजिटल डिवाइड- डिजिटल डिवाइड का अर्थ है तकनीकी संसाधनों, इंटरनेट, और डिजिटल सेवाओं तक असमान पहुँच। यह सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक असमानताओं के कारण उत्पन्न होता है, जिसके चलते कुछ वर्ग तकनीकी सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं।

समाधान (Solution)

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy) का अर्थ है डिजिटल माध्यमों, उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों का सही, सुरक्षित और प्रभावी उपयोग करने की क्षमता। इसके अंतर्गत सूचना की खोज, मूल्यांकन, संचार और नैतिक उपयोग की समझ विकसित की जाती है।

मुक्त स्रोत उपकरण (Open Source Tools) वे सॉफ़्टवेयर और तकनीकी संसाधन हैं, जिन्हें कोई भी उपयोगकर्ता बिना किसी लाइसेंस शुल्क के स्वतंत्र रूप से उपयोग, संशोधित और वितरित कर सकता है। ये लागत कम करते हैं, नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं और डिजिटल पहुँच को बढ़ाते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ (Future prospects)

एआई एजेंट आधारित सेवाएँ (AI Agent Based Services)- एआई एजेंट आधारित सेवाएँ वे स्वचालित डिजिटल प्रणाली हैं जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग तकनीकों के आधार पर उपयोगकर्ता की

आवश्यकताओं को समझकर त्वरित और सटीक सूचना प्रदान करती हैं। ये एजेंट व्यक्तिगत सहायक की तरह कार्य करते हैं, जो उपयोगकर्ता की पसंद, पिछली खोजों और व्यवहार के आधार पर सामग्री सुझाते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं और कार्यों को स्वचालित रूप से पूरा करते हैं।

सैमांटिक वेब (Semantic Web)- सैमांटिक वेब एक ऐसी इंटरनेट संरचना है, जिसमें डेटा को मशीन द्वारा समझने योग्य रूप में संगठित किया जाता है, ताकि कंप्यूटर भी अर्थ और संदर्भ को पहचान सके। यह RDF, OWL और SPARQL जैसी तकनीकों पर आधारित होता है।

नॉलेज ग्राफ़ (Knowledge Graph)- नॉलेज ग्राफ़ एक संरचित डेटा मॉडल है, जो सूचनाओं को नोड्स (सत्ताएँ) और एजेस (संबंध) के रूप में जोड़ता है, जिससे जटिल जानकारी का गहन विश्लेषण और उन्नत खोज संभव हो पाती है। लाइब्रेरी सेवाओं में इसका उपयोग सामग्री के बीच सार्थक संबंध स्थापित करने और स्मार्ट सर्च सुविधाएँ प्रदान करने में किया जा सकता है।

व्यक्तिकृत डिजिटल पुस्तकालय (Personalized Digital Library)- व्यक्तिकृत डिजिटल पुस्तकालय ऐसी डिजिटल सूचना सेवा है, जो उपयोगकर्ता की व्यक्तिगत रुचियों, शोध विषयों और पढ़ने की आदतों के आधार पर सामग्री का चयन और प्रस्तुतीकरण करती है। इसमें एआई, डेटा एनालिटिक्स और यूज़र प्रोफाइलिंग तकनीकों का उपयोग किया जाता है, ताकि प्रत्येक उपयोगकर्ता को उसके लिए सबसे प्रासंगिक संसाधन मिल सकें। यह सुविधा शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और पेशेवरों के लिए सूचना पहुँच को अत्यधिक सुविधाजनक बनाती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सूचना प्रबंधन के वर्तमान युग में रंगनाथन का दर्शन न केवल भारतीय पुस्तकालय विज्ञान की नींव है बल्कि वैश्विक स्तर पर सूचना संगठन और प्रबंधन के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्थापित हो चुका है। उनके पाँच नियमों ने यह सिद्ध कर दिया कि पुस्तकालय और सूचना सेवाओं का मूल केंद्र उपयोगकर्ता है तथा सूचना का संगठन, वर्गीकरण और अनुक्रमण इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए। डिजिटल युग में जब सूचना का स्वरूप, माध्यम और प्रसार अभूतपूर्व गति से बदल रहा है, तब भी रंगनाथन के सिद्धांत उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे।

आज सूचना का विस्फोट, डिजिटल परिवर्तन, बिग डेटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सूचना सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ पुस्तकालय विज्ञान के समक्ष उपस्थित हैं। इन सभी चुनौतियों का समाधान खोजने में रंगनाथन के विचार उपयोगी दिशा प्रदान करते हैं। उनकी वर्गीकरण एवं अनुक्रमण प्रणाली आधुनिक मेटाडेटा मानकों, नॉलेज ऑर्गेनाइजेशन सिस्टम्स और सेमांटिक वेब जैसी नवीन तकनीकों के साथ तालमेल बिठाने में सहायक सिद्ध होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि रंगनाथन का दर्शन केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण सूचना समाज के लिए एक आधारशिला है। उनका कार्य सूचना विज्ञान को निरंतर विकसित और उपयोगकर्ता

केंद्रित बनाए रखने का संदेश देता है। यही कारण है कि आज भी रंगनाथन को "भारतीय पुस्तकालय विज्ञान का जनक" ही नहीं, बल्कि आधुनिक सूचना प्रबंधन का शाश्वत मार्गदर्शक माना जाता है।

सन्दर्भ (References)

- Bandyopadhyay, R., & Majumder, K. (2012). Organising Traditional Knowledge for Inclusive Development: Role of Libraries. Bangladesh Journal of Library and Information Science, 2(1), 5–11.
- Dangi, R. K., & Saraf, S. (2017). Role of libraries in preservation of traditional knowledge. Qualitative and Quantitative Methods in Libraries, 6(1), 35–42.
- Ranganathan, S. R. (1931). The five laws of library science. Madras: Madras Library Association.
- Ranganathan, S. R. (1933). Colon classification. Madras: Madras Library Association.
- Ranganathan, S. R. (1963). Documentation and Its Facets. Bombay: Asia Publishing House.
- Satija, M. P. (2003). The five laws in information society and virtual libraries era. SRELS Journal of Information Management, 40(2), 93–104.
- उपाध्याय, जे. एल. (2007). पुस्तकालय विज्ञान के सिद्धांत. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
- पांडेय, एस. के. एवं शर्मा, एस. डी. (2004). पुस्तकालय और समाज. नई दिल्ली: ग्रन्थ अकादमी।
- वर्मा, शिवराम. एवं भारती, विजय कुमार. (2007). पुस्तकालय और समाज. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
- शर्मा, बी. के. एवं ठाकुर, यू. एम. (2018). पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान. आगरा: वाई के पब्लिशर्स।
- सिंह, भूपेंद्र नारायण. (2009). पुस्तकालय का इतिहास. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।

CITATION:

Peelwan, R., & K. Rao, S. (2025). सूचना प्रबंधन के वर्तमान युग में रंगनाथन दर्शन. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 133–144.